प्रवाह

निर्भीक पत्रकारिता का आठवां दशक
स्थापना वर्ष : 1948

शिक्षण एक बहुत ही महान पेशा है जो किसी व्यक्ति के चरित्र, क्षमता, और भविष्य को आकार देता है।
-एपीजे अब्दुल कलाम

चुनावी पराजयों की पृष्ठभूमि में कांग्रेस कार्य समिति की बैठक में राहुल गांधी ने और अचानक बुलाई गई आपातकालीन बैठक में ममता बनर्जी ने जिस रुख का परिचय दिया, वह आत्ममंथन नहीं है। गलतियां सुधार कर ही वे अपनी पार्टियों को मजबूती दे सकते हैं।

आत्ममंथन का समय

भाजपा

और एनडीए का नेता चुने जाने के बाद संसद के केंद्रीय कक्ष में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने एनडीए के नवनिर्वाचित सांसदों को संबोधित करते हुए जो कुछ कहा, उससे स्पष्ट है कि विराट जीत ने उन पर उम्मीदों और जिम्मेदारियों का जो भारी बोझ डाल दिया है, उसका उन्हें बखूबी एहसास है। इसी कारण उन्होंने 'सबका साथ, सबका विकास' के अपने नारे में 'सबका विश्वास' भी जोड़ा और संविधान की भावनाओं का पालन करते हुए गरीबी खत्म करने और अल्पसंख्यकों का भरोसा जीतने की जरूरत बताई। उन्होंने सांसदों को दिखावे से दूर रहने और सुविधाभोगी बनने या मंत्री पद की प्रत्याशा करने के बजाय जमीनी स्तर पर काम करने की नसीहत दी। दूसरी बार पहले से ज्यादा मजबूती के साथ चुने जाने के बाद भी नरेंद्र मोदी के संबोधन में गंभीरता और आत्ममंथन का भाव था। अलबत्ता उसी दिन पार्टी के सर्वोच्च नीति निर्धारक मंच कांग्रेस कार्य समिति में पार्टी अध्यक्ष राहुल गांधी ने, और सुदूर कोलकाता में बुलाई गई आपातकालीन बैठक में तृणमूल प्रमुख और पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी ने अपने-अपने इस्तीफे की जो पेशकश की, वह हार पर आत्ममंथन करने के बजाय खुद को जिम्मेदारी से अलग करने की भावुक कवायद ही ज्यादा थी। ऐसा इसलिए कि न तो कांग्रेस राहुल गांधी को अध्यक्ष पद से हटाने के बारे में सोच सकती है, न ममता के नेतृत्व के बगैर तृणमूल की कल्पना की जा सकती है। राहुल गांधी ने हालांकि पार्टी के कुछ वरिष्ठ नेताओं के पुत्रमोह का हवाला दिया, और यह शिकायत भी की कि चुनाव में पार्टी को वरिष्ठों का वैसा सहयोग नहीं मिला। कार्यसमिति ने उनका इस्तीफा खारिज करते हुए उन्हें तमाम जरूरी बदलाव करने को अधिकृत कर दिया है। कांग्रेस के लंबे इतिहास में यह लगातार दूसरी बार बदतर पराजय तो है ही, पार्टी एक दर्जन से अधिक राज्यों में खाता नहीं खोल पाई और कांग्रेस कार्यसमिति के ज्यादातर सदस्य चुनाव हार गए। अगर राहुल गांधी पार्टी संगठन को राष्ट्रीय स्तर पर मजबूत करने के साथ दूसरे साहसी कदम उठाएं, तभी उनकी संजीदगी का मतलब होगा। ऐसे ही, पश्चिम बंगाल में ममता बनर्जी को इस्तीफे की पेशकश करने के बजाय आक्रामकता और नकार की राजनीति छोड़नी चाहिए। राज्य में आज अगर उनकी जमीन खिसक रही है, तो इसके लिए वही सबसे ज्यादा जिम्मेदार हैं।

नए भारत की संकल्पना की विजय

लोकसभा चुनाव में नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में भाजपा की जीत 2014 की महाविजय से भी कहीं ज्यादा निर्णायक सिद्ध हुई। 'विश्वास' नामक शब्द भारतीय राजनीति के शब्दकोश में कई दशकों बाद वापस लौटकर आया है। पिछले पांच साल में प्रधानमंत्री मोदी के नेतृत्व में भारत में परिवर्तन और प्रगति के आसपास लड़ा गया यह चुनाव सत्ता समर्थक अभियान केंद्रित था, जिसका केंद्रबिंदु परिवर्तन एवं प्रगति रहा। अधिकांश देशवासियों ने इस प्रगति को जारी रखने की इच्छा जताई है, जिसमें नए भारत की संकल्पना, गरीबी मुक्त भारत और ऐसी अर्थव्यवस्था है, जो लोगों को किसी भी आंतरिक एवं बाह्य खतरे से बचाने में सक्षम हो।

अब चुनाव की गर्मी थम चुकी है। भारतीय राजनीति में रचनात्मक परिवर्तन और भारतीय मतदाताओं की आयु स्थायी है। लाखों भारतीयों का ध्यान इस नए भारत के बेहतर भविष्य के लिए है। विपक्ष के झूठ एवं अपशब्दों से भरे अभियान को सरल एवं शक्तिशाली विचारों से हार मिली, और लोगों ने नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में भरोसा किया।

मैंने पहले भी चुनावों में प्रचार किया है। पर भाजपा कार्यकर्ता के रूप में यह मेरा पहला चुनावी अभियान था, जब मैंने कर्नाटक चुनाव प्रबंधन के सह-संयोजक के रूप में कार्यकर्ताओं एवं नेताओं के साथ कर्नाटक एवं केंद्र में काम किया। सार्वजनिक कार्यक्रमों, रोड शो या छोटे दलों के साथ बातचीत और वोटरों के साथ हर बातचीत में- देश में प्रगति को जारी रखने के लिए उनका विश्वास एवं दृढ़ संकल्प की भावना बहुत स्पष्ट थी। बहुत सारे रोड शो के दौरान दर्शकों की सहज भागीदारी बहुत ही सामान्य थी।

समावेशी भारत के निर्माण के लिए देशवासियों ने नरेंद्र मोदी पर फिर भरोसा किया। लाखों भारतीयों का ध्यान अब इस नए भारत के बेहतर भविष्य के लिए है।

राजीव चंद्रशेखर, भाजपा नेता

चुनाव अभियान के दौरान मैंने कर्नाटक के वोटरों की मजबूत प्रतिक्रिया का पूर्वानुमान लगा लिया था। सामान्यतः पूर्वानुमानों के साथ सहज न होने के बावजूद मैंने वहां 21-23 सीटों का अनुमान लगाया था। एक आंतरिक बैठक के दौरान जब मुझसे मेरे नेता येदियुरप्पा ने तुमकुर सीट के बारे में पूछा, तो मैंने पूर्ण विश्वास के साथ भाजपा के प्रत्याशी बसवराज के बारे में अनुमान लगा लिया था कि वह पूर्व प्रधानमंत्री देवगौड़ा को हराएंगे।

भाजपा ने कर्नाटक में 28 में से 25 सीटें हासिल की है, जिनमें मांडया में भाजपा द्वारा समर्थित एक निर्दलीय उम्मीदवार भी शामिल है। कर्नाटक के चुनावी इतिहास में भाजपा को वहां अब तक की सबसे ज्यादा सीटें मिली हैं, जबकि कांग्रेस को सिर्फ एक सीट मिली है। भाजपा का वोट शेयर वहां 51.4 प्रतिशत है, जो अब तक का सबसे ज्यादा है।

इसके वास्तविक कारण हैं। कर्नाटक के मतदाताओं का एक अनूठा दृष्टिकोण था। पिछले पांच साल में मतदाताओं ने केंद्र में नरेंद्र मोदी की सरकार को और राहुल गांधी तथा महागठबंधन की महामिलावट का अनुभव किया। वह स्वयं प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के भ्रष्टाचार मुक्त, विजन केंद्रित शासन को, और कर्नाटक में कांग्रेस एवं जेडीएस के भ्रष्टाचार युक्त, परिवार केंद्रित शासन के बीच के अंतर को देख रहे थे। चंद्रबाबू नायडू, लालू यादव, अखिलेश एवं मायावती के साथ ममता बनर्जी जैसे नेताओं की भड़काऊ टिप्पणियां उन लोगों को भी परेशान करने वाली लगीं, जो भाजपा के परंपरागत समर्थक नहीं थे।

महागठबंधन का न तो कोई नेता था, न ही उनका कोई दृष्टिकोण था। यह वंशवादी दलों का एक अवसरवादी गठबंधन था, जिसने अपने अस्तित्व को खतरे से बचाने की एक नाकाम एवं हताश कोशिश की। मतदाताओं ने मजबूत भविष्य का निर्माण करने वाले नेताओं पर विश्वास कर जाति एवं धर्म की राजनीति करने वालों को हरा दिया।

जब एनडीए ने 2014 में सत्ता संभाली थी, तब देश में चुनौतियां बहुत बड़ी थीं। हमारी अर्थव्यवस्था चरमरा रही थी, देश की स्थिति खराब थी, हर तरफ निराशा व्याप्त थी और भ्रष्टाचार का बोलबाला था। नागरिकों के सपनों और आकांक्षाओं को पूरा करने के लिए देश की क्षमताओं के बारे में लोगों के मन में संदेह था।

एक तरफ जहां बहुत सारी चुनौतियां थीं, वहीं एक मजबूत, सुरक्षित एवं समृद्ध राष्ट्र बनाने हेतु प्रधानमंत्री का संकल्प भी था। यह 130 करोड़ भारतीयों की शक्ति और विश्वास द्वारा प्रभावित एवं प्रेरित था। बाधाएं अवसरों में बदल गईं और नकारात्मकता सकारात्मकता में परिवर्तित हो गई। यह देश अब आतंक की बर्बर शक्तियों के आगे लाचार नहीं है। शांति एवं विकास की राह को अवरुद्ध करने वालों को उसी की भाषा में जवाब दिया जाएगा। देश की आज वैश्विक स्तर पर अपनी एक बड़ी पहचान है। भारत के उदय को दुनिया पहचान चुकी है, जो प्रधानमंत्री मोदी की प्रचंड बहुमत के साथ हुई वापसी को लेकर विभिन्न देशों के नेताओं द्वारा प्रेषित बधाई संदेशों के आने से परिलक्षित होती है-जिनमें प्रधानमंत्री मोदी को एक बहुत बड़े लोकतांत्रिक देश के नेता के रूप में पहचाना गया है।

चुनावी जीत के तुरंत बाद प्रधानमंत्री मोदी ने सबसे पहले जो बात कही, वह है-'सबका साथ, सबका विकास, सबका विश्वास-विजयी भारत।' यह एक ऐसा संदेश था, जो समग्र रूप से सबको साथ लेकर चलने वाला है, और यह सभी भारतीयों को धर्म, जाति, उनके विश्वास, प्रांत और लिंग के परे उनके विकास एवं अवसरों का वादा करता है। उन्होंने संविधान की भावना को फिर से दोहराया, जिसके आधार पर भारत एवं भारतीय जीवित रहेंगे।

भाजपा के घोषणापत्र ने अपने संकल्प पत्र में एनडीए-3 के एजेंडे में संशोधन किया है। यह अभूतपूर्व कार्य सार्वजनिक परामर्श के माध्यम से किया गया और अब चुनाव से यह ध्यान हटाकर अगले पांच साल के लिए चला गया है, क्योंकि सरकार अब अपने उन वादों को पूरा करने में लगेगी और मजबूत एवं समावेशी भारत के निर्माण में जुटेगी, जो उसकी प्राथमिकता होगी कि वह अब एक सतत उच्च विकास वाली अर्थव्यवस्था का निर्माण करेगी। यह अब प्राथमिकता के साथ गरीबों की गरीबी दूर करने में मदद करेगी, जिससे अपने जीवन में उन्हें सुअवसर मिलें और समृद्धि प्राप्त हो।

अंतर्ध्वनि

>> शरद जोशी

ईमानदार लेखक भ्रम और उत्तेजना के बीच जीता है

हिंदी में लेखक होने का अर्थ है, निरंतर उन जगहों द्वारा घूरे जाना, जो आपको अपराधी समझती हैं। साहित्य में या महज जीवन जीने के लिए आप कुछ कीजिए, वे निगाहें आपको लगातार एहसास देंगी कि आप गलत हैं, घोर स्वार्थी हैं, हल्के हैं आदि। लेखक के रूप में आप यात्री बनें, तो यह तैयारी मन में कर लेते हैं कि यात्रा कठिन होगी, मंजिल अनिश्चित और अनजानी है, सुख केवल चलने और चलते रहने भर का है। संकरे रास्ते और तंगदिल लोगों के आक्रामक समूहों से जूझते हुए चलने का प्रयत्न करना साहित्य में जीना है। हिंदी में लेखक का आस-पास बहुत भयावना और निर्मम होता है। वह हमला न भी करे, तो भी उसे बचाव की लड़ाई लड़नी ही पड़ती है। यहां (हिंदी में) केवल आरोप लगते हैं और निर्णय दिए जाते हैं। बल्कि आरोप ही अंतिम निर्णय होते हैं। यहां (हिंदी में) 'आत्मकथ्य' केवल एक शब्द भर है। यहां आत्मा को शक से देखा जाता है और कथ्य पर कोई भरोसा नहीं करता। अक्सर हिंदी का ईमानदार लेखक भ्रम और उत्तेजना के बीच की जिंदगी जीता है। लिखने के लिए मुझे कुछ नहीं चाहिए। थोड़ी-सी धूप, ठंडी हवा, बढ़िया कागज़ और एक ऐसी कलम, जो बीच में न रुके। एकाध चाय। मैं आपको एक सुंदर रचना देने का वादा करता हूं। पर इस धूप की गारंटी नहीं है हिंदी में। कितनी बार, कितने घर, कितने कमरे, कितने आंगन बदलता हुआ मैं आज भी अपने जीवन को लेकर अनिश्चित हूं। यहां जीवन जीने की साफ-सुथरी स्थिति नहीं मिलती। और मैं चूंकि व्यंग्य लिखता हूं, इसलिए मेरे लिए तो ऐसी स्थिति मिलने का प्रश्न ही नहीं है। लिखना पूर्वजन्म का कोई दंड झेलना है। इसे निरंतर झेले बिना इससे मुक्ति नहीं। मैं झेल रहा हूं। पर मुझसे कहा जाए कि इस जन्म में भी आप पाप कर रहे हैं, तो यह मुझे स्वीकार नहीं।

-हिंदी के दिवंगत साहित्यकार-व्यंग्यकार

मंजिलें और भी हैं

>> राजेश कुमार सुमन

बच्चों से कोचिंग फीस के बदले पौधे लगवाता हूं

आप किसी को जो गुलदस्ता भेंट करते हैं, जो पेड़ की पत्ती और फूल से बनता है, जिससे पौधे का नुकसान होता है, लेकिन आप अगर गुलदस्ते के बदले फूल का पौधा भेंट करते हैं तो वह गुलदस्ते से सस्ता भी होगा और उसे लंबे समय तक याद भी रखा जाएगा। यही बात मेरे मन में बैठ गई, और यह अभियान शुरू हुआ। मैं बिहार के समस्तीपुर का रहने वाला हूं। बचपन से ही प्रकृति प्रेमी होने के साथ मैं गरीब बच्चों को पढ़ाने में रुचि रखता था। मेरे पिता हमेशा मेरे जन्मदिन पर मुझसे पौधारोपण करवाते और हमेशा पर्यावरण को सहेजने के लिए प्रेरित करते थे। मैंने समस्तीपुर महाविद्यालय से स्नातकोत्तर किया। कुछ समय बाद मुझे विदेश मंत्रालय में नौकरी मिल गई।

मैं अपनी नौकरी से खुश था, लेकिन, गरीब छात्रों के लिए जमीनी स्तर पर काम करने की इच्छा अब भी मेरे मन में बाकी थी। समस्तीपुर बिहार का पिछड़ा हुआ इलाका है। यहां छात्रों को सही मार्गदर्शन नहीं मिल रहा था और होनहार छात्र भी छोटा-मोटा काम करके अपनी जिंदगी गुजारने पर मजबूर थे। इस स्थिति को बदलने के लिए मैंने सोचा कि समस्तीपुर में एक इंस्टीट्यूट खोलकर छात्रों को विभिन्न प्रतियोगिताओं के लिए तैयार किया जाए, ताकि उनका भविष्य सुधर सके। इसी सोच को साकार करने के लिए मैं नौकरी छोड़कर बिहार वापस आ गया। मैंने वर्ष 2008 में बीएसएस क्लब नि:शुल्क शैक्षणिक संस्थान की स्थापना की और इसे ग्रीन पाठशाला का नाम दिया। शुरुआत में इसमें केवल चार छात्र थे, जिन्हें मैंने मुफ्त में पढ़ाना शुरू किया। बाद में दूर-दूर से बच्चे आने लगे। इंस्टीट्यूट तो चल रहा था, मेरा अगला लक्ष्य पौधे लगवाना था। इसके लिए जो भी बच्चे मेरे पास आते हैं, उनसे मैं फीस की जगह 18 पौधे लगाने का संकल्प करवाता हूं। हर बच्चे को जहां भी वे चाहें, 18 पौधे लगाने होते हैं और लगातार तीन-चार साल तक उनकी देखभाल करनी होती है। इसके पीछे मेरा लक्ष्य सिर्फ यह है कि कि हमारा ग्रीन कवर बढ़े और किसी भी बहाने आने वाली पीढ़ी पौधारोपण का महत्व समझे। ग्रीन पाठशाला के माध्यम से लगभग 4, 000 बच्चे शिक्षित हो चुके हैं। इनमें से 350 से अधिक बच्चे अलग-अलग विभागों में सरकारी नौकरियां कर रहे हैं। मैं और मेरी टीम के सदस्य गांव-गांव जाकर लोगों को पौधारोपण के लिए प्रेरित करते हैं। समस्तीपुर के अलावा यह अभियान दरभंगा, खगड़िया और बेगूसराय जिले तक पहुंच चुका है। अभियान को और सक्रिय करने के लिए मैंने *सेल्फी विद ट्री* की शुरुआत की, जिसमें लोग जगह-जगह पौधे लगाते हैं और उसके साथ सेल्फी लेकर सोशल मीडिया पर पोस्ट करते हैं। अब इस अभियान के प्रति जागरूकता बढ़ने के बाद लोग मुझे *पौधे वाले गुरु जी* के नाम से बुलाने लगे हैं। बच्चों से पौधारोपण करवाना, किसी भी समारोह में पौधे भेंट करना हो, या फिर गरीब बच्चों के लिए प्रतियोगिता की किताबों का बंदोबस्त करना हो, ये सारे काम मैं अपने वेतन से ही खर्च करता हूं। मुझे हमेशा लगता है कि, शिक्षा ही हर समस्या का समाधान है। और पर्यावरण को सुरक्षित रखने का काम लगातार चलने वाला है। इस काम के लिए किसी से जबर्दस्ती नहीं कर सकते। जब तक लोग पर्यावरण के प्रति अपनी जिम्मेदारी नहीं समझेंगे, वे इसे कभी नहीं बचा पाएंगे। पर्यावरण संरक्षण तब सफल होगा, जब हम इसे अपने जीवन, अपनी संस्कृति का हिस्सा बनाएंगे। यदि हम चाहते हैं कि आने वाले समय में पृथ्वी पर जीवन बचे, तो हमें पर्यावरण को सुरक्षित रखने की जिम्मेदारी खुद ही लेनी होगी।

शिक्षा हर समस्या का समाधान है, पर्यावरण को सुरक्षित रखने का काम लगातार चलने वाला है।

-विभिन्न साक्षात्कारों पर आधारित।

कामदार की जीत

जनता ने वंशवाद और जातिवाद को समाप्त करने तथा मोदी के नए भारत वाले सपने को साकार करने के लिए वोट दिया है। नामदार ने अगर इतना अहंकार नहीं दिखाया होता, तो शायद इतनी बुरी तरह नहीं हारते।

तवलीन सिंह

लेख की शुरुआत में ही मैं यह स्वीकार करती हूं कि मुझे बिल्कुल जानकारी नहीं थी कि नरेंद्र मोदी की जीत इस बार इतनी बड़ी होगी कि ऐतिहासिक मानी जाएगी। ऐसा नहीं है कि जनता की आवाज सुनने के लिए मैंने दिल से प्रयास नहीं किया था। चुनाव अभियान शुरू होने और उसके दौरान भी मैं राजस्थान, मध्य प्रदेश, हरियाणा, उत्तर प्रदेश और महाराष्ट्र में घूम रही थी। उस दौरान मैंने गांवों में जाकर आम मतदाताओं से बातें कीं और यह भी देखने का प्रयास किया कि मोदी की गरीबी हटाओ योजनाएं कितनी सफल रही हैं।

ग्रामीण क्षेत्रों के इन दौरों पर मैंने करीब सौ-सवा सौ लोगों से चुनावों के बारे में बातें की होंगी। इसके बावजूद, कि अधिकतर लोगों ने कहा कि उनका वोट मोदी को जाएगा, मुझे उस सुनामी का जरा भी पता नहीं लगा, जो पिछले बृहस्पतिवार को देश भर में आई और अपने साथ विपक्ष के उन तमाम राजनेताओं को बहा ले गई, जो कल तक प्रधानमंत्री बनने के सपने देख रहे थे।

जिस दिन परिणाम आए, मैं जीटीवी के स्टुडियो में सुबह-सवेरे पहुंची और अपने पत्रकार बंधुओं से चर्चाएं कीं, जैसा हम लोग अक्सर चुनाव परिणाम आने से पहले करते हैं। हममें आम सहमति बनी कि नरेंद्र मोदी देश के अगले प्रधानमंत्री बन तो जाएंगे, लेकिन उनके लिए बहुमत हासिल करना मुश्किल होगा, क्योंकि उत्तर भारत में 2014 में जो सीटें उन्हें मिली थीं, उन्हें किसी हालत में दोबारा हासिल नहीं कर सकेंगे। पिछली बार राजस्थान, उत्तर प्रदेश और मध्य प्रदेश में उनको तकरीबन सारी सीटें मिली थीं और हमने मान लिया कि ऐसा दोबारा होना नामुमकिन है। सो जब परिणाम आने शुरू हुए और दोपहर होने से पहले ही लगा कि भाजपा इस बार अपनी पिछली बहुमत से भी बड़ी बहुमत हासिल कर सकती है, तो मैं हैरान रह गई।

शाम तक जब पता लगा कि राहुल गांधी अमेठी से हार गए हैं और उनके सारे करीबी दोस्त भी हार गए हैं, तो मैं विश्लेषण करने बैठी और इस नतीजे पर पहुंची कि देश की जनता ने वंशवाद को, जातिवाद को समाप्त करने और मोदी के नए भारत वाले सपने को साकार करने के लिए वोट दिया है।

ऐसा लगा, जैसे देश के मतदाताओं ने तय कर लिया हो आपस में कि मोदी बेशक अपने पहले कार्यकाल में अच्छे दिन नहीं ला सके हों, लेकिन ऐसा होना पांच वर्ष में असंभव है, सो उनको पांच वर्ष और देने चाहिए, वर्ना वही पुराना दौर लौट आएगा, जिसमें लोकतंत्र के भेष में उनको सामंतवाद मिलता था। जब राजनेता अपने चुनाव क्षेत्र को निजी जायदाद बनाकर अपने किसी वारिस के हवाले करते हैं, तो उसको लोकतंत्र नहीं कहा जा सकता। जब राजनीतिक दल भी इस तरह विरासत में दिए जाते हैं, तब सामंतवाद नहीं होता है, तो क्या होता है? सो लड़ाई वास्तव में नामदार और कामदार के बीच थी, जिसमें कामदार की जीत हुई है।

नामदार ने अगर इतना अहंकार नहीं दिखाया होता, तो शायद इतनी बुरी तरह नहीं हारते। अहंकार इतना कि प्रधानमंत्री पद की गरिमा भी भूल गए। मेरा अपना मानना है कि 'चौकीदार चोर है' वाला नारा कांग्रेस अध्यक्ष के लिए सबसे नुकसान कर गया। इस नारे में वैसे भी अहंकार दिखता है, लेकिन जब एक राजकुमार के मुंह से एक चायवाले के बेटे के लिए निकलता है, तो और भी बुरा लगता है।

सो मेरा इस चुनाव का प्राथमिक विश्लेषण यही है कि कांग्रेस के बुरी तरह हारने के दो मुख्य कारण थे : अहंकार और लोकतंत्र में लिपटा सामंतवाद। जनता को बेवकूफ बनाना अब इतना आसान नहीं है, जितना कभी था।

खुली खिड़की

विश्व में श्रमिक अधिकार

विश्व के विभिन्न देशों में श्रमिक अधिकारों को लेकर कई तरह के कानून प्रचलन में हैं। श्रमिकों का जीवन सुधारने के लिए कई तरह की योजनाएं चलाई जा रही हैं। वर्ष 2018 में आई वर्ल्ड इकोनॉमिक फोरम की रिपोर्ट के मुताबिक श्रमिक अधिकार के मामले में भारत 110वें स्थान पर है।

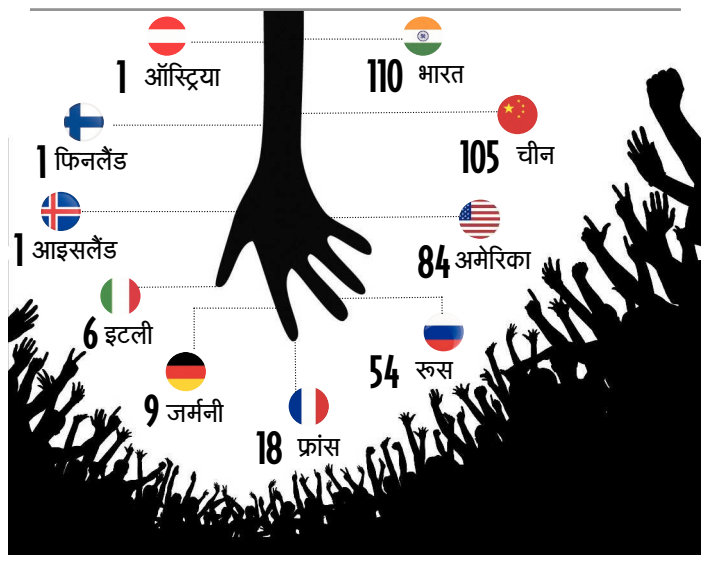

दूसरों के पीछे मत भागो

स्वामी विवेकानंद आश्रम में अपने पालतू कुत्ते के साथ टहल रहे थे। तभी अचानक एक युवक आकर उनसे कहने लगा, स्वामी जी, मैं अपनी जिंदगी से बहुत परेशान हूं। मैं परिश्रम तो बहुत करता हूं, लेकिन उसका मुझे कोई लाभ नहीं मिलता। पढ़ा-लिखा होने के बावजूद मुझे जीवन में उतनी सफलता नहीं मिल रही, जितनी मैं चाहता हूं। अब आप ही बताइए कि मैं क्या करूं? विवेकानंद उस युवक की परेशानी समझ गए। उन्होंने उससे कहा, एक काम करो, थोड़ी देर के लिए मेरे इस कुत्ते को बाहर से घुमाकर लाओ। युवक को यह अजीब तो लगा, पर वह कुत्ते को लेकर चला गया। दस मिनट बाद वह लौटा, तो वह पहले जैसा ही सामान्य दिख रहा था, जबकि कुत्ता बेहद थका हुआ था।

सत्संग

स्वामी जी ने पूछा, भाई, यह बताओ, यह कुत्ता इतना थका हुआ है, जबकि तुम शांत दिख रहे हो। क्या तुम्हें थकावट महसूस नहीं हुई? युवक बोला, मैं तो रास्ते में धीरे-धीरे ही चल रहा था, पर आपका कुत्ता तेज भाग रहा था। वह सड़क पर जिसे भी देखता, उससे आगे निकल जाने की होड़ करता। इसी कारण वह थक गया है और हांफ रहा है। स्वामी जी बोले, भाई, तुम्हारी जिज्ञासा का उत्तर यही है कि तुम्हारा लक्ष्य तुम्हारे पास है, जबकि तुम व्यर्थ की दौड़ लगा रहे हो। इसी कारण तुम अपने लक्ष्य से दूर चले जाते हो। उस युवक की जिज्ञासा का समाधान हो गया।

-संकलित

हरियाली और रास्ता

मनीष, इंटरव्यू और एक सवाल

एक युवक की कहानी, जिसे इंटरव्यू के दौरान ही अपने महत्व का पता चला।

मनीष पहली बार कोई इंटरव्यू देने जा रहा था। इंटरव्यू भी कोई ऐसा-वैसा नहीं, बल्कि एक नामचीन कंपनी के लिए था, जिसके बोर्ड मेंबर खुद मनीष का इंटरव्यू लेने वाले थे। इंटरव्यू एक बड़े पांच सितारा होटल में था। मनीष बढ़िया सूट-बूट पहनकर इंटरव्यू देने पहुंचा। डिग्री और व्यक्तित्व के हिसाब से मनीष नौकरी के लिए एकदम उपयुक्त अभ्यर्थी था। उसे, और उसके परिवार वालों को यकीन था कि वह आसानी से नौकरी हासिल कर लेगा। इंटरव्यू में उसने सारे सवालों के जवाब दिए। फिर उससे सवाल किया गया कि, आखिर आपके अंदर ऐसा क्या है कि कंपनी आप को ले ले। मनीष काफी देर तक सोचता रहा, लेकिन उसे कोई अच्छा जवाब सूझ ही नहीं रहा था। उसने सोचने के लिए कुछ समय मांगा। इंटरव्यू लेने वाले व्यक्ति ने कहा, आपका चयन हो गया है, लेकिन इस सवाल का जवाब आपको हमें देना ही होगा। सोचने के लिए आप चाहें, तो दस मिनट का समय ले सकते हैं। तब तक हम किसी दूसरे उम्मीदवार का इंटरव्यू लेते हैं। मनीष बाहर जाकर बैठ गया और सोचने लगा। वहां मौजूद बाकी उम्मीदवार भी मनीष से किसी मामले में कम नहीं दिख रहे थे। सब उसी की तरह अच्छी डिग्री लेकर आए थे। ऐसे में ऐसी कौन-सी बात हो सकती है, जो मनीष में है, लेकिन औरों में नहीं। एक पल के लिए मनीष ने हार ही मान ली थी। तभी उसकी नजर दीवार पर लगे एक पोस्टर पर पड़ी। उस पर लिखा था, आप जैसा कोई नहीं। दुनिया में जितने भी लोग हैं, उनमें से आप जैसा कोई भी नहीं। कोई आप जैसा दिखता होगा, लेकिन सोचता नहीं। कोई आप जैसा सोचता होगा, लेकिन महसूस करता नहीं। अपने महत्व को पहचानो। मनीष को अपने सवाल का जवाब मिल गया था। अब वह जवाब देने के लिए तैयार था।

हम में से हर किसी को एक खास रूप में, खास मकसद के लिए बनाया गया है।